International Journal of New Media Studies (IJNMS), ISSN: 2394-4331
Volume 10 Issue 2, July-December, 2023, Impact Factor: 7.786

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में 'स्त्री विमर्ष'

हरिस्वरुप

शोधार्थी, हिंदी विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, बागड़ राजपूत, अलवर (राजस्थान)

परिचयः–

प्राचीन समय में नारी का अस्तित्व पुरुष के समक्ष अत्यंत गौण था। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले की स्थिति हो या बाद की नारी का लगातार शोषण होता रहा है कभी माँ के रूप में कभी पत्नी कभी बेटी तो कभी प्रेमिका के रूप में। पुरुषों की एकाधिकार सत्ता के कारण महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी। उसे मात्र उपभोग की वस्तु समझा जाता था। उन्हें घर की चारदीवारी में कैद रहना पड़ता था। उनकीअपनी कोई स्वतंत्रता नहीं जिसके चलते वे कोई निर्णय ले सकें न उनको कोई अधिकार प्राप्त थे। वे पूर्ण रूप से पुरुषों पर आश्रित थी वे जैसा चाहे वैसा व्यवहार स्त्रियों से कर सकते थे और स्त्री को उनके द्वारा किए जाने वाले सभी अत्याचारों को सहन करना पड़ता था। गोविन्द मिश्र जी के उपन्यासों में नारी की पीड़ा तथा अपनी अस्मिता की खोज के लिए उसका निरंतर संघर्ष का वास्तविक रूप हमें देखने को मिलता है।

मुख्य शब्दः– पतिव्रता नारी, भारतीय नारी, सामाजिक स्थिति, पाश्चात्य संस्कृति व आधुनिक सोच

पतिव्रता नारीः–

पतिव्रता नारी वह नारी जो तन–मन से पूर्ण रूप से अपने पति के प्रति सर्मपण का भाव रखती है। उसके लिए उसके पति के अतिरिक्त अन्य कोई पुरूष उसके हृदय में समाहित नहीं हो सकता। वह अपने पति के कहे शब्दों को अपना धर्म मानकर उनका पालन करती है तथा सभी प्रकार के अनैतिक संबंधों से दूर रहती है। उसका पति चाहे कैसा भी हो उसके साथ कैसा भी बर्ताव करता हो–उसे प्रेम करता हो या उसके साथ मार–पीट करता हो वह सब कुछ सहन करके भी उससे दूर जाने की नहीं सोचती। फिर चाहें परिस्थिति कैसी भी हो वह अपने पति धर्म का हर स्थिति में पालन करती है। आधुनिक समाज में पतिव्रता नारियों की संख्या प्राचीन काल की नारियों की अपेक्षा कम है।

गोविन्द मिश्र के कई उपन्यासों में ऐसी नारी पात्र है जो भारतीय धर्म व संस्कृति के अनुसार पति को परमेश्वर मानकर उनके प्रति पूर्ण निष्ठा का भाव रखती हैं। 'पाँच आँगनो वाला घर' की शांति ऐसी नारी पात्र है जो अपने पति 'राधेलाल' को ही सर्वस्व मानती है। राधेलाल जो मुंशी थे जो देश की आजादी का स्वप्न दिन–रात देखते थे। इसलिए अपने सपने को पूरा करने के लिए उन्होनें अपना घर, परिवार, वकालत सब कुछ त्याग दिया।

राधे के मन में जितना प्रेम अपने परिवार के लिए था उससे अधिक देश के लिए किंतु फिर भी अपने बीवी–बच्चों से दूर रहने की तकलीफ उनके हृदय में भी थी। वह शान्ति से कहता है–''मैनें तुम्हें बहुत दुख दिया है न शान्ति!'' शान्ति कहती है– ''कैसी बातें करते हैं। आपका यज्ञ मेरा यज्ञ है! आपसे अलग कहा हूँ मैं।'... शान्ति ने पति के पैर छुए। शान्ति की आँखें पोंछते हुए राधेलाल की अपनी आंखे भीग गई। क्या हैं ये नारियाँ! पति की आस्था अपनी आस्था... कितना विश्वास पति पर...।[1]

शान्ति बड़े घर की लड़की थी किन्तु बहुत अधिक पढ़ी–लिखी नहीं थी फिर भी बहुत संस्कारी थी। उसका स्वभाव अत्यंत सरल व सम्मोहन करने वाला था। ससुराल में आते ही उसने इतने प्यार से घर संभाला कि पाँच आँगनो वाले घर में रहने वाला बड़ा संयुक्त परिवार उससे पूरी तरह घुल–मिल गया। बच्चे हो या बूढ़े वह सबका बहुत अच्छे से ध्यान रखती। न किसी से ईर्ष्या और न द्वेष की भावना और न ही उसमें चालाकी नाम की कोई चीज। उसके लिए तो उसकी पूरी दुनिया सिर्फ उसका पति और परिवार था।

राधेलाल भी शान्ति से बहुत प्रेम करते थे। बहुत लाड़–प्यार व इज्जत के साथ वे शान्ति को रखते। इसलिए स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के लिए जब राधे ने घर छोड़ा तो शान्ति बिल्कुल अकेली पड़

गई। आर्थिक रूप से भी घर की स्थिति काफी कमजोर हो गई परन्तु फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी और विपरीत से विपरीत परिस्थितियों का लगातार सामना करते हुए उनसे संघर्ष करते हुए परिवार को संभाले रखा। बच्चों को पढ़ाया–लिखाया, जब राधेलाल स्वतंत्रता की लड़ाई में जेल गए और बीमार पड़ गए तो शान्ति ने ही दिन–रात अपने पति की सेवा की।

भारतीय नारीः–

भारतीय नारी जो पतिव्रता धर्म का पालन करती है वह हर परिस्थिति चाहे वे अनुकूल हो या प्रतिकूल अपने पति का साथ निभाती है। 'हुजूर दरबार' उपन्यास की नारी पात्र हरीश की माँ भी अपने पति धर्म का पालन करती दिखाई देती है। हरीश के पिता 'राजगुरू पंडित संतोष शर्मा जी दरबारी विरासत में राजमहल के राजगुरू व मठ के स्वामी होने के साथ–साथ गृहस्थ भी थे। गृहस्थ होने के बावजूद भी वे घर छोड़कर ज्यादा समय मठ में ही बिताते थे। वे. राजमहल व मठ के अधीन थे इसलिए घर की अपेक्षा अपनी जिम्मेदारी महल की तरफ अधिक समझते थे। इसी कारण हरीश की माँ उदास रहती किंतु फिर भी एक शब्द नहीं कहती। हरीश के अनुसार– ''माँ उन औरतों में से थीं जो पति की सुख–सुविधा को सब कुछ मानती हैं, पति की दुनिया के बाहर जैसे उनके लिए कुछ था ही नहीं।''[2]

जिस स्त्री का पति उससे ज्यादा महत्त्व राजमहल व राजमहल में रहने वाले लोगों को देता हो घर में कभी–कभी आना जैसे घर के सदस्य नही मेहमान हो फिर भी पति के चरणों में ही अपना स्वर्ग मानने वाली ऐसी स्त्री में सहनशक्ति अद्भुत ही हो सकती है। वह कच्चे घर की साफ–सफाई में पूरा दिन लगी रहती उसकी सहायता करने वाला अन्य कोई घर में नही। पति के लिए खाना बनाकर रखती परन्तु घर पर बना खाना वे कभी–कभार ही खाते थे। इन सबके बाद भी हरीश की माँ किसी से कोई शिकायत नही करती।

वह गली–मोहल्ले में सबसे बहुत प्रेम से रहती। सबके सुख–दुख में साथ निभाती थी। उसे पति का कुछ सपने कुछ जरूरतें या कुछ उम्मीदें सहारा नही मिला जितना मिलना चाहिए था। आखिर उसके भी तो होती अपने पति से जैसे सब औरतों को होती है और जब वे पूरी न हो तो न जाने कितनी कुंठा व निराशा का शिकार हो जाए। किन्तु हरीश की माँ में कोई कड़वाहट नहींहाँ चिंतित जरूर रहती क्योंकि उन्हें रियासती वातावरण में रह रहे राजाओं के अधीन काम करने वाले लोगों पर तनिक भी भरोसा नहीं था और न ही वह परतंत्रता को स्वीकार करती थी।

जब हरीश ने भी राजमहल जाना शुरू कर दिया तो हरीश की माँ के चिंता के भाव और बढ़ने लगे। वह चाहती थी कि हरीश राजमहल व उसकी दुनिया से दूर रहे और स्वयं अपने बलबूते पर अपनी पहचान बनाए न कि अपने पिता की भांति राजमहल के कर्मों पर पले। माँ की यह चिंता स्वाभाविक थी। इसलिए वह भी सोचता– ''माँ को न घर मिला, न पति। एक लड़का झोली में आया था सो वह भी इस तरह कि लो, इस खिलौने से जी बहला लो। वह खिलौना भी अब राजमहल उनसे छीन ले रहा था।''

हरीश की माँ की भांति न जाने कितनी स्त्री है, भारतीय समाज में जो अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी परवरिश व शिक्षा देना चाहती है और चाहती है कि वे पढ़–लिखकर अपना और अपने परिवार का नाम रोशन करें। स्वयं बहुत ज्यादा पढ़ी–लिखी न होने के कारण या अनपढ़ होने के कारण भी अपने बच्चों का भविष्य उज्ज्वल देखने की चाह जो हर माँ में होती है। ऐसी माँ जो सुहागिन होते हुए भी एक विधवा की भाँति जिंदगी जीने को विवश फिर भी अपने पति से कोई तकरार नही कुछ नही करती, यदि करती भी तो क्या कर सकती थी क्योंकि न वह पढ़ी–लिखी थी न आर्थिक रूप से संपन्न। यदि अपने बच्चे के साथ जाती भी तो कहाँ इसलिए अपने मन में ही संघर्ष की लौ दबाए वह सब कुछ ईश्वर के नाम पर छोड़कर अपने पति का हर परिस्थिति में साथ निभाती है। जैसे हर पतिव्रता पत्नी करती है।

सामाजिक स्थितिः–

भारतीय समाज में जहां एक तरफ पति को ही अपना सब कुछ मानकर उस पर अपना पूरा अर्पण करने वाली नारी है वही दूसरी तरफ अपने ऊपर होने वाले अन्याय व अत्याचारों के खिलाफ आवाज सुख की उठाने वाली विद्रोही नारी है। अपना जीवन कैसा और किसके साथ जीना है। किसके साथ उसे अनुभूति होती है किसके साथ नही यह सब बहुत सोच–समझकर फैसला करती है। वह अपने आपको

किसी के अधीन नहीं बल्कि स्वतंत्र रूप से अपना जीवन जीना चाहती है। इसलिए आधुनिक नारी पहले की अपेक्षा अपने अधिकारों व कर्त्तव्यों के प्रति बहुत सजग है और बाहर निकलकर काम करने को तैयार है। अपनी एक अलग सोच को विकसित कर वह अपनी समाज में पहचान बनाने के लिए निरंतर संघर्ष की राह पर अग्रसर है।बदलते युग के साथ बदलती परिस्थितियों व सामाजिक संस्थाओं के प्रयासों से नारी की स्थिति में इस हद तक परिवर्तन आया है कि अब वह हर परिस्थिति में फिर चाहें वह सम हो या विषम। अपनी शिक्षा व विकसित होते दृ ष्टिकोण से किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ सकती है और अपनी लड़ाई स्वयं लड़ सकती है।

आज की नारी अपना तथा अपने परिवार का लालन–पोषण करने के लिए भी आत्मनिर्भर नारी किसी पर आश्रित नही अब उसे घर की चाहरदीवारी में रहकर घर के अन्य पुरूषों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

गोविन्द मिश्र जी नारी की स्वतंत्रता व समानता के पक्ष में भी इनका दृष्टिकोण रहा हैं। अपनी दृष्टि में भारतीय नारी को अपनी संस्कृति से पूर्ण रूप से परिचित रहते हुए सभी मूल्यों का निर्वाह करते हुए अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए। उनके उपन्यासों के नारी पात्रों में जहाँ एक तरफ संस्कारी व पतिव्रता नारी दिखाई देती है तो वहीं दूसरी तरफ प्रगतिशील व विद्रोही नारी का भी स्वर गूंजता है।

'तुम्हारी रोशनी में' उपन्यास की नायिका 'सुवर्णा' एक विद्रोही व आत्मनिर्भर नारी के रूप में होती है जो स्वच्छंद विचारधारा को अपनाती है और विचारों में खुलापन रखती है। वह काफी पढ़ी–लिखी व काम–काजी नारी है। एक दफ्तर में अधिकारी के रूप में काम करती है इसलिए काफी लोगों से उसका मिलना–जुलना रहता है। वह 'रमेश' की पत्नी व दो बच्चों की माँ है। रमेश और सुवर्णा की सोच में व स्वभाव में कुछ विभिन्नताएँ है। वह सुवर्णा को स्वतंत्रता से जीवन जीने की छूट देता है परन्तु वह छूट कितनी और किस हद तक देनी है इसका निर्णय वह स्वयं करना चाहता है। जबकि सुवर्णा अपनी शर्तों पर अपना जीवन जीने वाली स्त्री है। उसे किसी की रोक–टोक पसंद नहीं चाहिए फिर वह कोई भी क्यों न हो।

सुवर्णा रमेश का घर छोड़कर अपने माँ बाप के पास आ जाती है। वह अपने पति को परमेश्वर मानकर उसके अनुसार जीवन बिताने वालों में से नहीं बल्कि अपनी इच्छानुसार स्वतंत्र मानसिकता के साथ जिंदगी जीने में विश्वास रखती है। उसके अनुसार– ''वह कोई जायदाद नहीं है।''[4]

नारी शिक्षा का विस्तार व स्वाधीनता की भावना ने नारी की परंपरागत धारणा को बदल दिया है जिसके परिणामस्वरूप आधुनिक नारी में एक नई चेतना का विकास हुआ है। सुवर्णा उसी चेतना कापरिणाम है जो विवाह संबंधी जितनी भी परंपरागत धारणाएँ उन सभी को तोड़कर अपने स्वतंत्र अस्तित्व केलिए अपने ही संबंधों से संघर्ष करती है। समाज की परम्परागत सोच से रूढ़िवादी विचारों से नारी का संघर्ष जारी है।

सुवर्णा स्वावलंबिनी बनकर अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करना चाहती है किन्तु समाज की संकीर्ण मानसिकता अनेक बार उसे ऐसा करने से रोकती है परन्तु फिर चाहे समाज में उसके अपने ही उसके विरूद्ध क्यों न खड़े हो नारी की मानसिक चेतना उसे उन सभी अवरोधों के प्रति संघर्ष के लिए प्रेरित करती है ताकि वह अपने भविष्य को लेकर देखे गए उन सभी स्वप्नों को पूरा कर सके जो उसके संपूर्ण विकास में सहयोगी हो ।

सुवर्णा के अतिरिक्त एक अन्य उपन्यास 'धूल पौधों पर' की 'नायिका' भी आत्मनिर्भर बनने के लिए निरंतर संघर्ष करती है। 'नायिका' का पति 'युवा गुरु' धार्मिक पाखंडों की आड़ में अपनी पत्नी के साथ राक्षसों से भी बुरा बर्ताव करता है। वह स्वंय को धार्मिक गुरू मानकर अपनी पत्नी से भी यही चाहता है कि वह भी धर्म के सभी कार्यों में उसका साथ दें।

नायिका को यह सब पसन्द नहीं था। समाज के सामने उसका पति अपनी मान–प्रतिष्ठ को बनाए रखने के लिए नायिका को मजबूर करता कि वह भी धर्म गुरू के साथ गद्दी पर बैठे, पूजा–पाठ करें। जब वह इन सबका विरोध करती तो उसके साथ जानवरों से भी बुरा व्यवहार किया जाता है।

पति की क्रूरता व उदासीनता के कारण नायिका अन्दर से पूरी तरह टूट चुकी थी। तब उसके जीवन

में प्रो० प्रेम प्रकाश के आने से नई उम्मीद जगती है। वह अपनी पढ़ाई करने और नौकरी करने की कोशिश में लग जाती है ताकि स्वयं को आत्म निर्भर बना घर की इन क्रूरताओं व बेड़ियों से स्वयं को आजाद करा सकें। वह प्रेम प्रकाश से कहती है– ''आपको यह समझने में थोड़ी मेहनत करनी होगी कि हमारे देश में अभी भी ऐसी कितनी जगह, घर और परिवार हैं जहाँ लड़की को कूड़ा–करकट से ज्यादा कुछ नहीं समझा जाता। हमारे जीने–मरने की चिंता नहीं की जाती।''[5]

नायिका का यह कथन भारतीय समाज की विडम्बना को व्यक्त करता है जहां लड़की केमान–सम्मान उसके वजूद के होने या न होने की कोई परवाह नहीं की जाती बस एक बोझ समझ लिया जाता है जो किसी भी पुरूष के साथ ब्याह कर उतार दिया जाता है बिना लड़की की खुशियों की परवाह किए।

नायिका अपनी पढ़ाई पूरी कर नौकरी से अपना घर चलाती है। अब वह अपने पति की दरिंदगी को सहती नहीं बल्कि उसका विरोध करती है। वह आत्मनिर्भर बनने के साथ स्वाभिमानी भी है। उसकी दृष्टि में पति से या ससुराल में किसी अन्य से पैसों के लिए भीख मांगना मतलब अपने स्वाभिमान को गिरा देना। इसलिए जब उसका पति उसे नौकरी छोड़ने को कहता है तो वह कहती है– ''नौकरी सिर्फ पैसे के लिए नहीं की जाती। इसके माध्यम से हम अपने हिस्से का कर्म करते हैं, अनुशासन में रहते हैं... आज के समाज में स्कूलमें मेरी योग्यताओं के हिसाब से क्या तनख्वाह मिलती है... पर जितनी भी मिले.. इससे बच्चे के फीस, ट्यूशन का खर्चा और मेरा खर्चा तो निकल आता है।''[6]

इस प्रकार नायिका स्वयं को अपने पति से दूर रहकर अपना और अपने बच्चे का दायित्व संभालती है। धर्म की क्रूरता दर्शाने वाले अपने पति को हमेशा के लिए छोड़ने का निर्णय लेती है। यह सिर्फ नायिका और उसके परिवार की कहानी नहीं बल्कि ऐसे असंख्य परिवारों की त्रासदी है जहां औरत का सम्मान नहीं बल्कि उसके वजूद को पैरों तले रौंदने का प्रयास किया जाता है। जिस पति के सहारे वह अपना घर–बार सब छोड़कर विवाह के बंधन में बंध कर आती है वही पति उसे केवल भोग की वस्तु समझ जबरदस्ती उससे सेक्सुअल संबंध बनाने की जिद्द करता हैं। जानवरों की तरह व्यवहार करता है जैसे खरीदी हुई कोई बेजान वस्तु हो जिसके साथ जब चाहे जैसा व्यवहार कर सके और जब वही स्त्री उसका विरोध करें तथा बाहर कहीं अपना सुख दुख का साथी तलाश करें तो चरित्रहीन भी वहीं स्त्री कहलाती है। लोगों को यह दोहरी मानसिकता बदलने की आवश्यकता है। तभी नारी को समाज में पुरुष के समान दर्जा मिल सकेगा।

मिश्र' जी के उपन्यासों में चित्रित नारी–

गोविन्द मिश्र जी के उपन्यासों में चित्रित नारी का संघर्ष महत्वाकांक्षी व केन्द्रित नारी के रूप में भी दिखाई देता है। 'वह अपना चेहरा' उपन्यास की 'रचना' दिल्ली जैसे बड़े शहर में एक कार्यालय में काम करने वाली महत्वाकांक्षी नारी है जो कार्यालय में अपने पद तथा प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहती है। कॉलेज के दिनों में उसकी मुलाकात 'शुक्ला' नामक व्यक्ति से होती है जो इस उपन्यास का अहम् पात्र है। दोनों में नजदीकी भी बढ़ती है किन्तु उसे (रचना) वह(शुक्ला) सपने पूरे करने में कहीं सक्षम दिखाई नहीं देता इसलिए वह कार्यालय में केशवदास जैसे उच्च पद पर आसीन अधेड़ उम्र का व्यक्ति से संबंध स्थापित करती है। यही सोचकर कि वह उसे उच्च पद दिला सकता है। उसके साथ वह किसी भी हद तक समझौता करने को तैयार रहती है।

शुक्ला रचना के विषय में सोचता रहता कि ''रचना को कहीं से डर था कि शादी करने के बाद वहएक मामूली गृहस्थिन बन कर एक किनारे पड़ जाएगी। किले पर फतह करते चले जाना, लोगों को पास खींचना, खींचकर झटके से छोड़ देना कि वे बिलबिलाते रह जाएँ... यह शक्ति, रूप की इस शक्ति का इस्तेमाल फिर वह नही कर सकेगी।[7]

रचना जैसी अनेक लड़कियाँ व स्त्रियाँ है जो अपने नाम व पैसा कमाने की इच्छा से किसी भी हद जाने को तैयार रहती है जो समाज के बनाए नियमों को ताक कर रखती है और उनके बारे में कहता है वे किसी की परवाह नहीं करती और अपने सपनों को महत्वाकाक्षाओं को पूरा करने के लिए कुछ लगातार संघर्ष करती हैं।

'तुम्हारी रोशनी में' उपन्यास की सुवर्णा भी स्वावलंबी, आत्मनिर्भर होने के साथ–साथ स्वकेन्द्रित नारी भी है

जिसका प्रेम अपने पति व बच्चों तक सीमित नही है। वह अनन्त को कहती भी है– 'यह प्रेम नही, आत्महत्या है दूसरे की खातिर अपने को मारते चले जाना। प्यार वह है जो हमें खोलें, न कि बन्द करें।''[8] सुवर्णा अपनी स्वतन्त्रता अपना सुख तलाश करती है और जब रमेश (उसका पति) उसकी इस स्वतन्त्रता में बाधा बनने की कोशिश करता है तो वह उसे छोड़ देती है। वह अपने पति तथा परिवार के प्रति इतनी चिंतित नहीं जितनी अपनी इच्छाओं व खुशियों के प्रति है। इसलिए वह स्वच्छन्द जीवन जीने के मोह में अपने बनाए रास्तों पर चलती है। किन्तु स्वच्छन्द जीवन जीने की उसकी इच्छा अंत में परिवार के साथ–साथ सुवर्णा के स्वयं के अस्तित्व को भी विघटित करने की स्थिति में पहुंचा देती है।

हुजूर दरबार' उपन्यास की नारी पात्र 'नेपाल सरकार भी अपने स्वतंत्र अस्तित्व की खोज में इतनी डूब जाती है कि वह मर्यादा की सारी सीमाएँ लांघती चली जाती है। नेपाल सरकार राजा रूद्र प्रताप सिंह की चौथी रानी थी जिसके जीवन में दिखावे का आडंबर बहुत अधिक था। उसे राजसी ठाठ–बाट शान आदि में कोई खास रूचि नहीं थी। उसे लगता कि वह बस एक राजा की पत्नी के तौर पर ही सारा जीवन पहचानी जाएगी। उसकी अपनी कोई पहचान नहीं कोई अस्तित्व नहीं। यही सोच–सोचकर वह दिन–रात घूटती रहती।

अपनी शारीरिक जरूरतों व इच्छाओं को पूरा करने के लिए वह 'हरीश' जैसे युवा अविवाहित का सहारा लेती है। उसे महल बुलाती है उसके साथ अनैतिक संबंध स्थापित करती है। नेपाल सरकार देखने में अति सुंदर, युवा मांसल शरीर जिसे देखकर हरीश भी उसके प्रति आकर्षित हो जाता है। नेपाल सरकार अपने अन्दर महल से दूर कहीं बाहर जाकर अपनी अलग पहचान बनाने की घुटन जिससे वह दिन–रात मन ही मन संघर्ष कर रही थी। हरीश ही उसके इस मानसिक अवसाद को शांत करने का एक मात्र साधन था जिसे नेपाल सरकार जब तक मन बहलाने के लिए प्रयोग करती है जब तक उसका मन भर नही जाता।

रियासतों के समाप्त हो जाने पर तथा राजा रूद्रप्रताप सिंह की मृत्यु के बाद नेपाल सरकार की महत्वाकांक्षाए और भी बढ़ गई। वह अब चुनाव लड़कर सत्ता की कुर्सी पाना चाहती थी। ''वे चुपचाप एक किनारे नही बैठेगी... उसी सीढ़ी का सहारा लेगी जिस पर चढ़कर लोग उनके महल तक पहुँच गए थे। भले ही इसके लिए ढोंग करना हो। स्वयं को मिटाना हो कुछ भी करना हो। वे सत्ता में पहुँचेंगी... फिर से इस बार किसी राजा की पत्नी बनकर नहीं, अपने बलबूते पर... [9]

आजादी से पूर्व रियासती राजमहलों के वातावरण में प्राचीन समय में एक राजा की अनेक रानियाँ होती थी जिन्हें अपने पति के साथ सुख की अनुभूति तो दूर उनका चेहरा भी कई–कई दिनों में देखना नसीब होता था। राजा अपने राजसी कार्यों में महल की प्रजा की देखभाल करने में या विलासी राजा होता तो मदिरा में ही डूबा रहता। उनके साथ ब्याह कर आई हुई रानियों की मनोदशा का उनकी शारीरिकजरूरतों का उन्हें तनिक भी अहसास नही रहता और रानियों का महत्व इतना ही था कि जब कभी कोई यज्ञ या अनुष्ठान होता तो उसमें रानियों को राजसी प्रथा के अनुसार साथ बैठना होता या फिर राजसी वंश को उनका उत्तराधिकारी के रूप में संतान पैदा करना इससे अधिक रानियों का अपना कोई वजूद नहीं। परिणामस्वरूप रानियों की इच्छाएँ उनकी राजा से अपेक्षाएँ कभी पूरी नही होती और मन ही मन वे कुण्ठा व निराशा या शिकार होती रहती । रानियों की दशा उस समय शोचनीय थी।

नेपाल सरकार की भी दबी कुण्ठाएँ व इच्छाएँ अब उसकी महत्वाकांक्षा का रूप ले चुकी थी जिन्हें वह हर हाल में पूरा करना चाहती थी। नेपाल सरकार की सहेली 'सुधा' उसे समझाती भी है कि वह सत्ता में आने की अपनी जिद छोड़ दें किंतु नेपाल सरकार चुनाव जीतकर लोगों पर राज करना चाहती थी। बरसों से अपनी खुद की पहचान बनाने का स्वप्न अब पूरा होने जा रहा था जिससे वह पीछे नहीं हटना चाहती थी। वह सुधा को कहती है– ''तुम देखो, मैं क्या–क्या करती हूँ... रियासत के तंग घेरे को तोड़कर मुख्य धारा से मैं राष्ट्रीय स्तर पर उतरूंगी। लोग भी तो यही कहते हैं कि राजवंश के लोगों को देश को जोड़ना चाहिए।''[10]

सुधा नेपाल सरकार के हित में सोचती है इसलिए उसे समझाती है किंतु नेपाल सरकार किसी की भी सुनने को तैयार नही थी। सुधा नेपाल सरकार के विषय में सोचती है ''कैसी होती है यह महत्वाकांक्षा जो अपने लिए एक रंग ढूँढकर ले आती है... जो

आदमी को पागल कर देती है, एक ऐसे रास्ते पर ला खड़ा करती है जहाँ सिर्फ भागना ही भागना है, हमेशा भागते रहना है।''[11]

पाश्चात्य संस्कृति व आधुनिक सोचः–

पाश्चात्य संस्कृति व आधुनिक सोच ने नारी को अपने अधिकारों व स्वतन्त्रता के प्रति सजग तो किया है साथ ही स्वकेन्द्रित व महत्वाकांक्षी भी बना दिया है। हर मनुष्य को अधिकार है अपने सपने पूरे करने का। अपनी समाज में एक अलग पहचान बनानें का किंतु सभी सपने को पूरा करने के लिए किस सीमा रेखा तक उन्हें स्वयं को रखना है और कितना बाहर जाने देना है यह निर्णय स्वयं मनुष्य का होता है।इसलिए सपने को पूरा करने का हौंसला रखते हुए संघर्ष अवश्य करना चाहिए किंतु आत्म–संतुष्टि भी बहुतआवश्यक है। इंसान की इच्छाओं का कोई अंत नही जितना चाहे वह उन्हें बढ़ा सकता है उनके लिए।

निष्कर्षः–श्श्श्श्श्श

इस प्रकार गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित नारी के विभिन्न स्वरूप हमें देखने को मिलते हैं जिसमें नारी के आत्मनिर्भर, पतिव्रता और महत्वाकांक्षी आदि नारी के रूप का चित्रण किया गया है। इन के उपन्यासों में चित्रित नारी कहीं तो अपने पति धर्म को निभाती नजर आती हैं तो कहीं अपनी जीवन शैली को स्वतंत्र रूप से जीने के लिए आत्मनिर्भर बन जाती हैं। जहां समाज में नारी को पुरुष के समान मान–सम्मान नहीं मिलता वहां पर नारी का विद्रोही रूप भी देखने को मिलता है और साथ में ही वह समाज से लोहा लेती नजर आती हैं। हर कठिनाई का डटकर सामना करती हैं।

संदर्भ सूचीः–

1. गोविंद मिश्र, पांच अंगनो वाला घर, पृष्ठ–49
2. गोविंद मिश्र, हुजूर दरबार, पृष्ठ–16
3. वहीं, पृष्ठ–51
4. गोविंद मिश्र, तुम्हारी रोशनी में, पृष्ठ–127
5. गोविंद मिश्र, धूल पौधों पर, पृष्ठ–77
6. वहीं, पृष्ठ–103
7. गोविंद मिश्र, वह अपना चेहरा, पृष्ठ–21
8. गोविंद मिश्र,तुम्हारी रोशनी में, पृष्ठ–105
9.गोविंद मिश्र, हुजूर दरबार, पृष्ठ–231
10.वहीं, पृष्ठ–230
11. वहीं, पृष्ठ–2